Regd. With the Registrar of News Papers of India at PUN BIL/2002/07848
Postal Reg. No. GDP-41/2017-19

मजिल्स अन्सारुल्लाह भारत का तर्जुमान

अन्सारुल्लाह

अगस्त/ 2020 ई०

Annual Subscription: Rs. 210/- (Per Issue: Rs. 20/-
(Weight : 50-100, grms / Issue)

मस्जिद नब्वी का एक सुन्दर दृश्य

मस्जिद क़ुबा : तारीख़-ए-इस्लाम की पहली मस्जिद जो मदीना से तीन किलोमीटर की दूरी पर क़ुबा बस्ती में उपस्थित है, हज़रत मुहम्मद सअव और हज़रत आबु बक़र 8 रबीउल अव्वल 13 नब्वी साल (23 सितम्बर 622) सोमवार के रोज़ यसरब की इस बाहरी बस्ती में पहुंचे और 14 दिन यहाँ रहे इसी समय इस मस्जिद की बुनियाद रखी गई।

मस्जिद किब्लातैन : यह मस्जिद मदीना में उपस्थित है, साल 2 हिजरी में नमाज़ के समय किब्ला बदलने का आदेश हआ, हज़रत मुहम्मद सअव और सहाबा ने नमाज़ में ही अपना मुंह बैतुल मुक़द्दस से ख़ाना क़ाबा की ओर फेरा। एक नमाज़ में दो किब्लों की ओर मुंह कर के नमाज़ पढ़ी गई इसलिए इसे मस्जिद किब्लातैन अर्थात "दो किब्लों वाली मस्जिद" कहा जाता है।

"जंगे बद्र" में शहीद होने वाले सहाबा र.अ.अन्हुम की याद में बनाया गया स्मारक जिस पर उनके नाम भी लिखे हुए हैं।

हुदैबिया का वह स्थान जहाँ मुसलमान और कुफ्फ़ार के मध्य संधि हुई जो इस्लामिक इतिहास में "सुलह हुदैबिया" के नाम से प्रसिद्ध है।

CMYK

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

یٰۤاَیُّہَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا کُوۡنُوۡۤا اَنۡصَارَ اللّٰہِ

سورۃ الصّف آیت ۱۵

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का प्रवक्ता

मासिक पत्रिका

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

Volume - 18 अगस्त 2020 Issue - 8

निगरान
अताउल मुजीब लोन

सम्पादक
सय्यद रसूल नियाज़

उप-सम्पादक
शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री
09915379255

मैनेजर
मक्सूद अहमद भट्टी
Ph. +91 84272 63701

कम्पोज़िंग
तसनीम अहमद बट्ट

प्रैस
फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रैस
क़ादियान

वार्षिक मूल्य : 210 ₹
विदेश : 50 अमरीकी डॉलर

प्रकाशन स्थान
ऐवाने अन्सार, भारत
क़ादियान - 143516
ज़िला : गुरदासपुर, पंजाब
फोन : 01872-220186
फैक्स : 01872-224186

विषय सूची	पृष्ठ

दर्सुल क़ुर्आन	2
दर्सुल हदीस	2
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेश	3
सम्पादकीय - क्या आंहज़रत(सल.) की फिरासत से हिस्सा पाना चाहते हैं?	4
सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन - हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह का पत्र	6
तक़रीर सीरत आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तकरीर सीरत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम	7 8

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Ansarullah Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Ansarullah Bharat, P.o. Qadian, Distt. Gurdaspur 143516 Punjab India. Editor Syed Rasool Niyaz

قرآن کریم दर्सुल क़ुर्आन

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَ لٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَ خَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا (सूर: अल- अहज़ाब आयत 41)

اِنَّ اللّٰهَ وَ مَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ؕ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَ سَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا

(सूर: अल- अहज़ाब आयत 57)

अनुवाद -मुहम्मद तुम्हारे (जैसे) पुरुषों में से किसी का पिता नहीं बल्कि वह अल्लाह का रसूल है और सब नबियों का ख़ातम है और अल्लाह हर चीज़ का बहुत ज्ञान रखने वाला है

अनुवाद : अवश्य अल्लाह और इस के फ़रिश्ते नबी पर रहमत भेजते हैं हे वे लोगो जो ईमान लाए हो तुम भी इस पर दुरूद और ख़ूब ख़ूब सलाम भेजो।

दर्सुल हदीस

عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ فُضِّلْتُ عَلَى الْاَنْبِيَآءِ بِسِتٍّ اُعْطِيْتُ جَوَامِعَ الْكَلِمِ وَنُصِرْتُ بِالرُّعْبِ وَاُحِلَّتْ لِیَ الْغَنَائِمُ وَجُعِلَتْ لِیَ الْاَرْضُ مَسْجِدًا وَطَهُوْرًا وَاُرْسِلْتُ اِلَى الْخَلْقِ كَافَّةً وَخُتِمَ بِیَ النَّبِيُّوْنَ۔

(मुस्लिम किताबुल मसाजिद पृष्ठ 194, भाग 1)

अनुवाद - हज़रत अबूहुरैरा रज़ी अल्लाह तआला अन्हो से रिवायत है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। दूसरे नबियों पर मुझे छः (6)बातों में प्राथमिकता है। हक़ायक़ तथा मआरिफ़ के जामा (सारगर्भित) बातें मुझे दी गई हैं। रोब से मेरी सहायता की गई। मेरे लिए ग़नाइम(जंग के माल) हलाल किए गए हैं। मेरे लिए सारी धरती पवित्र तथा साफ़ मस्जिद और इबादत का स्थान क़रार दी गई और मुझे सारी सृष्टि की तरफ़ भेजा गया और मुझे नबियों का ख़ातम बनाया गया।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश

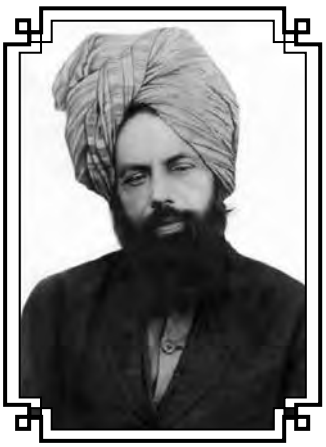

स्थायी नबुव्वत आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ख़त्म हो गई है

"जिस सम्पूर्ण इन्सान पर क़ुरआन शरीफ़ नाज़िल हुआ उस की नज़र सीमित न थी और इस की आम ग़मख़वारी और हमदर्दी में कुछ दोष न था। बल्कि क्या ज़मान की दृष्टि से और क्या स्थान की दृष्टि से उस के नफ़्स के अंदर पूर्ण सहानुभति मौजूद थी। इसलिए क़ुदरत की तजल्लियात का पूरा और कामिल हिस्सा उस को मिला और वह ख़ातमुल अंबिया बने। परन्तु इन अर्थों में नहीं कि भविष्य में उस से कोई रुहानी फ़ैज़ नहीं मिलेगा बल्कि इन अर्थों से कि वह साहबे ख़ातम है उस की मुहर के अतिरिक्ति कोई फ़ैज़ किसी को नहीं पहुंच सकता। और उस की उम्मत के लिए क़यामत तक अल्लाह तआला का मुकालमा और मुख़ातबा (वार्तालाप) का दरवाज़ा कभी बंद न होगा और उस के अतिरिक्ति कोई नबी साहबे ख़ातम नहीं। एक वही है जिसकी मुहर से ऐसी नबुव्वत भी मिल सकती है जिसके लिए उम्मती होना अनिवार्य है। और उस की हिम्मत और हमदर्दी ने उम्मत को दोषपूर्ण अवस्था पर छोड़ना नहीं चाहा। और उन पर वह्य का दरवाज़ा जो मार्फ़त की प्राप्ति की मूल जड़ है, बंद रहना सहन नहीं किया। हाँ अपनी ख़त्म रिसालत का निशान क़ायम रखने के लिए यह चाहा कि वह्य का फ़ैज़ आपके अनुकरण के माध्यम से मिले और जो व्यक्ति उम्मती न हो उस पर वह्य इलाही का दरवाज़ा बंद हो। अत: ख़ुदा ने इन अर्थों से आपको ख़ातमुल अंबिया ठहराया। अत: क़यामत तक यह बात स्वीकृत हुई कि जो व्यक्ति सच्चे अनुकरण से अपना उम्मती होना साबित न करे और आपके अनुकरण में अपना समस्त वजूद लीन न करे ऐसा इन्सान क़यामत तक न कोई पूर्ण वह्य पा सकता है और न पूर्ण मुलहम हो सकता है। क्योंकि स्थायी नबुव्वत आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर समाप्त हो गई है। मगर ज़िल्ली (प्रतिरूप) नबुव्वत जिसके अर्थ हैं कि केवल फ़ैज़ मुहम्मदी से वह्य पाना वह क़ियामत तक बाक़ी रहेगी ताकि इन्सानों की सम्पूर्णता का दरवाज़ा बंद न हो और ताकि यह निशान दुनिया से मिट न जाए कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिम्मत ने क़यामत तक यही चाहा है कि अल्लाह तआला के मुकालमात और मुख़ातबात के दरवाज़े खुले रहें और इलाही मार्फ़त जो मुक्ति का आधार है समाप्त न हो जाए।"

(हकीक़तुल वह्य रुहानी ख़ज़ाइन भाग 22 पृष्ठ 29,30

सम्पादकीय

क्या आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की फ़िरासत से हिस्सा पाना चाहते हैं?

इन्सान अपनी शारीरिक, दुनियावी और आध्यात्मिक पूर्णता के लिए आज़माया जाता है। मुश्किलों का शिकार होता है। परन्तु ऐसे अवसरों पर उचित फ़ैसला लेना ज़रूरी होता है। वर्ना इन्सान नुक़्सान का शिकार होता है। परन्तु जब एक क़ौम का महान नेता हो तो फिर बहुत फ़िरासत(दूरदर्शिता) से फ़ैसला लेना ज़रूरी होता है वर्ना पूरी क़ौम का भविष्य अन्धेरे में जाने का भय होता है। जब हम इस दृष्टिकोण से सीरत आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अध्ययन करेंगे तो हम पर स्पष्ट होगा कि आप ख़ुदा तआला द्वारा दी गई दूरदर्शिता से किसी घटना के होने से पूर्व ही उस के लक्ष्णों से ही वास्तविकता महसूस करते हुए ऐसा मन्सूबा बनाते थे कि संभावित नुक़्सानों से मुस्लमानों को बचा लाया करते थे। और इस्लाम की तरक़्क़ी के लिए रास्ता बराबर होता जाता। अत: आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की फ़िरासत की गवाही देते हुए अल्लाह तआला फ़रमाता है। تَعْرِفُهُمْ بِسِيمَاهُمْ لَا يَسْأَلُونَ النَّاسَ إِلْحَافًا(अल-बकर 274) अर्थात तू उन(ग़रीबों) की निशानियों से उनको पहचानता है वे पीछे पड़ कर लोगों से नहीं मांगते।

इस्लाम के आरम्भ में छुप कर तब्लीग़, फिर रिश्तेदारों को तब्लीग़ और ताइफ के सफ़र से वापसी पर मुतअम बिन अदी की पनाह लेकर दोबारा मक्का में दाख़िल होना,दारे अर्क़म को तब्लीग़ का मर्कज़ बनाना फिर हज के अवसर पर विभिन्न क़बीलों को आप का निहायत बुद्धिमत्ता और हिक्मत के साथ तब्लीग़ करना। शुअबे अबी तालिब में तीन साल तक क़ैद रोज़ाना रात को आप अपने सोने की जगह तब्दील करते और रात के समय कमाल हिक्मत से मक्का में मौजूद हमदर्दों से सम्पर्क करके खाना जमा करके मुस्लमानों के लिए प्रबन्ध फ़रमाते थे। मुस्लमानों को हब्शा की तरफ़ फिर मदीना की तरफ़ हिजरत करने की हिदायत देना ये वे हिक्मत वाले काम थे जिनके परिणाम स्वरूप इस्लाम धीरे धीरे तरक़्क़ी करता रहा। जब ख़ुद आप ने हिजरत की तो साथी का च्यन, निकलने के वक़्त का फ़ैसला, हज़रत अली को अपने बिस्तर पर लिटाकर निकलना,मदीना हिजरत के समय आप कभी समुन्द्र के तट के साथ-साथ इस हिक्मत से चले कि साधारण रास्ता के बराबर रह कर सीधा जाने के स्थान पर इस रास्ता को पार करके कभी दाएं और कभी बाएं निकल जाना। मदीना पहुंच कर मस्जिद नबवी के स्थान का चुनाव ,अन्सार और मुहाजिरीन में भाई-भाई बनाना इत्यादि आपकी ग़ैरमामूली फ़िरासत के नमूने हैं।

हज़रत अबू हुरैर रज़ि जब बहुत भूख के कारण से हज़रत अबू बकर रज़ि और हज़रत उमर रज़ि से एक आयत का अर्थ पूछने लगे परन्तु वे अर्थ बताकर चले गए। लेकिन नबी करीम उन के उद्देश्य को समझ गए और अपने घर ले जाकर अस्हाबे सुफा और हज़रत अबू हुरैरह रज़ि को दूध पिलाना आप की उच्च दूरदर्शिता है।

रसूले करीम मुनाफ़क़ीन को भी उन के चेहरों से पहचान लिया करते थे। अल्लाह तआला आप के बारे में फ़रमाता है। فَلَعَرَفْتَهُمْ بِسِيمَاهُمْ (मुहम्मद 31) अर्थात उन को उनके चेहरे से अवश्य पहचान लेगा।

मीसाक़े मदीना, समस्त जंगों,सुलह हुदैबिया,फ़तह मक्का के अवसर पर भी आप ने महान दूरदर्शिता से काम लिया। आप की रुहानी फ़िरासत ने भाँप लिया था

कि अल्लाह तआला आप के बाद हज़रत अबू बकर रज़ि को ख़िलाफ़त के पद पर आसीन फ़रमाएगा। इस लिए आप ने इस बारे में कोई वसीयत नहीं की थी।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अस्सलाम फ़रमाते हैं

मजमअुल बहरैन इलमो मार्फ़त

जामेअ अल-इसमैन अब्र व ख़ावरे

अर्थात वह ज्ञान तथा मअर्फत का दुहरा समुन्द्र है। बादल और सूर्य दोनों नामों का जमा करने वाला है।

(दुर्रे समीन फ़ारसी पृष्ठ 21 अनुवाद हज़रत डाक्टर मीर मुहम्मद इस्माईल)

आज भी हम आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुकरण से इस दूर्दर्शिता में से हिस्सा पा सकते हैं। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ फरमाते हैं।

" आप का कथन, कर्म और नसीहतें जो क़ुरआन करीम की हिक्मत वाली शिक्षा हैं, इस की तफ़सीर हैं जो आप के हर कथन और कर्म में झलकती हैं। अत: यह उत्तम आचरण जो हमारे लिए अल्लाह तआला ने हमारे हर कथन तथा कर्म को हिक्मत वाला बनाने के लिए भेजा है। यही है जिसके पीछे चल कर हम हिक्मत तथा दूरदर्शिता वाले बन सकते हैं।"

(ख़ुत्बा जुमा14 दिसम्बर 2007 ई)

दुआ है कि अल्लाह तआला हमें रसूलुल्लाह के उत्तम आदर्श पर अनुकरण करते हुए व्यक्तिगत और मज्लिस के कामों में दूरदर्शिता से काम लेने की तौफ़ीक़ प्रदान करे। आमीन

INDIAN AUTO

हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।

P. Ali Koya

CALICUT (KERALA)

"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"

MUSTAFA BOOK CO

All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities

Fort Road

KANNUR-1 (KERALA)

Mobile : 09895655426

SONET SOLUTIONS

PRIVATE LIMITED

No.41, II Cross, Doctors Layout,
Kasturi Nagar,
BANGALORE - 560043

तालिबे दुआ :

MUSADDIQ AHMAD

Mobile : 098451-98560

Tel : +91 (80) 41636612

Web : www.sonetsolutions.in

सय्यदना इमामुना हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद

ख़लीफतुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़

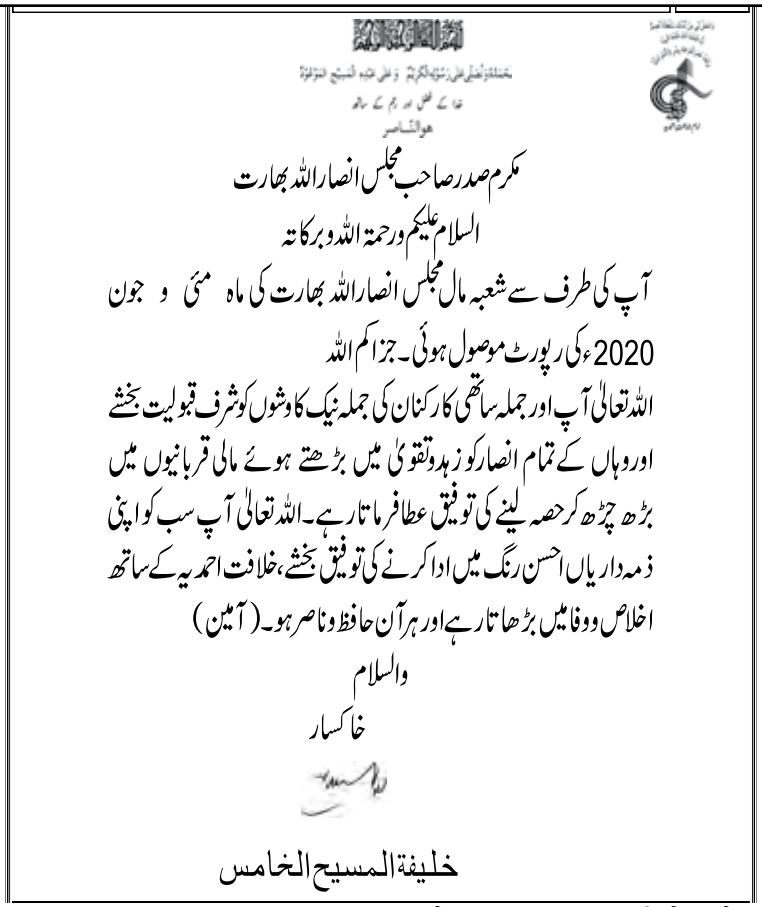

مکرم صدر صاحب مجلس انصاراللہ بھارت

السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ

آپ کی طرف سے شعبہ مال مجلس انصاراللہ بھارت کی ماہ مئی و جون 2020ء کی رپورٹ موصول ہوئی۔ جزاکم اللہ

اللہ تعالیٰ آپ اور جملہ ساتھی کارکنان کی جملہ نیک کاوشوں کو شرف قبولیت بخشے اور وہاں کے تمام انصار کو زہد وتقویٰ میں بڑھتے ہوئے مالی قربانیوں میں بڑھ چڑھ کر حصہ لینے کی توفیق عطا فرماتا رہے۔ اللہ تعالیٰ آپ سب کو اپنی ذمہ داریاں احسن رنگ میں ادا کرنے کی توفیق بخشے، خلافت احمدیہ کے ساتھ اخلاص ووفا میں بڑھاتا رہے اور ہر آن حافظ وناصر ہو۔ (آمین)

والسلام

خاکسار

خلیفۃ المسیح الخامس

सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन

समस्त अन्सार को हुज़ूर अनवर के मक्तूब के आलोक में ताकीद की जाती है कि अन्सारुल्लाह के चन्दा मेम्बरी और इज्तिमा की समीक्षा करें कि आप ने अभी तक कितना चन्दा अदा किया है। हुज़ूर अनवर ने फरमाय है कि" वहां के समस्त अन्सार को नेकी तथा तक्वा में बढते हुए माली कुर्बानियों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेने की तौफ़ीक प्रदान फरमाता रहे।" हुज़ूर अनवर सी सेवा में निरन्तर माल की रिपोर्ट भिजवाई जाती है आप को अपनी समीक्षा करते हुए हुज़ूर अनवर की दुआओं की वास्तविक वारिस बनने के लिए हर संभव कोशिश करनी चाहिए। अल्लाह तआला आप को इस की तौफीक़ प्रदान करे। आमीन

सदर मजलिस अन्सारुल्लाह भारत

❁❁❁

तक़रीर

सीरत आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

हमारे आक़ा हज़रत मुहम्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जिस तरह अपनी लाई हुई इलाही शरीयत और शिक्षाओं में सब से अकेले हैं। इसी तरह आप की सीरत, आप की आदतें तथा आचरण भी अतुल्नीय और अमुपमीय हैं। आप ने इन्सानियत को वह कुछ दिया जो न पहले किसी ने दिया था और न भविष्य में कोई दे सकता है। बल्कि सच तो यह है अव्वलीन तथा आख़रीन सभी ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से ही अल्लाह तआला के फ़ज़लों को पाया है इसीलिए अल्लाह तआला ने आप को ख़ातमन्नबिय्यीन क़रार दिया और आप की शान में फ़रमाया۔ اِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ (अल-क़लम 5)कि आचरण तथा किरदार की वह बुलन्दी आप को प्राप्त है उस से उच्चतर नहीं। नबुव्वत से लाभन्वित होने से पहले आप मक्का में सिद्दीक़ और अमीन के लक़ब से प्रसिद्ध थे। नबुव्वत मिलने के बाद अगर किसी शख़्स को अपनी अमानत रखवानी होती थी तो वह आप ही के पास रखवाता था। आरम्भिक तीन साल तक आप अलग अलग लोगों को इस्लाम धर्म की दावत देते रहे। चौथे साल जब आप पर यह हुक्म नाज़िल हुआ।وَاَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الْاَقْرَبِيْنَ(अश्शुअरा-215) अर्थात तू अपने क़रीबी रिश्तेदारों को डरा। तब आप ने समस्त क़ुरैश को जमा किया और सब को सम्बोधित करते हुए फरमाया कि यदि मैं तुम्हें यह कहूं कि इस पहाड़े के पीछे दुश्मन का एक लश्कर तुम पर हमला करने के लिए आ रहा है तो क्या तुम मेरी बात को मान लोगे। सबने एक आवाज़ में होकर कहा क्यों नहीं। مَا جَرَّبْنَا عَلَيْكَ اِلَّا الصِّدْقَ अर्थात हमने सिवाए सच्चाई के आप में कोई और बात नहीं देखी। कट्टर विरोधियों ने भी आपके सच्चे होने को स्पष्ट स्वीकार किया। रसूल अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने स्पष्ट फ़रमाया कि بُعِثْتُ لِاُتَمِّمَ مَكَارِمَ الْاَخْلَاقِ और ख़ुदा तआला ने भी पवित्र कलाम में समस्त मुस्लमानों को यह आदेश फ़रमाया कि: لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ (अहज़ाब: 22) कि अल्लाह के रसूल में तुम्हारे लिए बेहतरीन नमूना मौजूद है।

रसूले अकरम बहुत ही पाकीज़ा तबीयत और नेक दिल आदमी थे। हदीसों में ज़िक्र है कि एक सहाबी ने हज़रत आईशा सिद्दीक़ा रज़ि से हज़ूर के आचरण के बारे में पूछा। हज़रत आईशा रज़ि ने जवाब फ़रमाया। كَانَ خُلُقُهُ الْقُرْآن अत: आप की पवित्र ज़िन्दगी परिपूर्ण है। हर कोई अपने समार्थय के अनुसार आप के आचरण और रुहानी समुन्द्र से ग़ोता लगा कर ही मोती इकट्ठे करता है और अपनी आख़रत की पूँजी से माला-माल होता है।

आप ने क़यामत तक दुनिया का मार्गदर्शन किया, आप की विनम्रता, इश्क़े इलाही ,भरोसा, दृढ़ता, सहनशीलता, पवित्रता, सच्चाई, बर्दाश्त की शक्ति, न्याय तथा इन्साफ़ आपकी क़ुर्बानियां आपका ग़रीबी अत: यह कि आप की पवित्र सीरत का प्रत्येक पहलू अपने अन्दर एक निराली शान रखता है।

आप की पवित्र सीरत के बारे में हज़रत मसीह

मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"ख़ुदा तआला ने हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जीवनी के दो हिस्सों पर आधारित कर दिया। एक हिस्सा दुखों और मुसीबतों और कष्टों का और दूसरा हिस्सा विजय का.. अत: ऐसा ही आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दोनों किस्म के आचरण दोनों ज़मानों और दोनों हालतों के आने पर कमाल स्पष्टता से प्रमाणित हो गए। अत: वह मुसीबतों का ज़माना जो हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर तेरह वर्ष तक मक्का मुअज़्ज़मा में रहा। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वह आचरण जो मुसीबतों के समय सम्पूर्ण सच्चों को दिखलाने चाहिऐं ...ऐसे रूप पर दिखला दिए तो कुफ़्फ़ार ऐसी दृढ़ता को देखकर ईमान लाए.. फिर जब दूसरा ज़माना आया अर्थात विजय और प्रभुत्व और ताक़त का ज़माना, तो इस ज़माना में भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उच्च अख़लाक़ क्षमा , दानशीलता और बहादुरी के ऐसे कमाल के साथ प्रकट हुए जो कुफ़्फ़ार के एक बड़े गिरोह का इन्हीं आचरण को देखकर ईमान लाया।"

(इस्लामी उसूल की फ़िलासफ़ी रुहानी ख़ज़ायन भाग 10 पृष्ठ 447)

हसीनाने आलम हुए शर्मगीं
जो देखा वह हुसन और वह नूरे जबीं
फिर इस पर वह अख़लाक़ अकमल तरीं
कि दुश्मन भी कहने लगे आफ़रीं
ज़हे ख़ुलक़े कामिल ज़हे हुस्न ताम
अलैकस्सलातो अलैकस्सलाम

अल्लाह तआला हमें हुज़र अनवर की सीरत तथा उच्च आचरण को अपनाने की तौफीक़ प्रदान करे। आमीन

तक़रीर
सीरत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

अल्लाह तआला ने हज़रत अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वजूद से शरीयत को पूर्ण कर दिया। जैसा कि वह फ़रमाता है। اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا (अल-मायद 4) अर्थात आज के दिन मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा धर्म पूर्ण कर दिया और तुम पर मैंने अपनी नेअमत सम्पूर्ण कर दी है और मैंने इस्लाम को तुम्हारे लिए धर्म के रूप में पसन्द कर लिया है।

आख़िरी ज़माना के बारे में अल्लाह तआला फ़रमाता है। وَقَالَ الرَّسُوْلُ يٰرَبِّ اِنَّ قَوْمِي اتَّخَذُوْا هٰذَا الْقُرْاٰنَ مَهْجُوْرًا (अल-फ़ुर्कान 4) और रसूल कहेगा हे मेरे रब! यक़ीनन मेरी क़ौम ने इस क़ुरआन को परित्यक्त कर के छोड़ा है। हदीस में आता है। يَأْتِيْ عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ لَا يَبْقٰى مِنَ الْاِسْلَامِ اِلَّا اِسْمُهٗ وَلَا يَبْقٰى مِنَ الْقُرْاٰنِ اِلَّا رَسْمُهٗ (मिश्कात किताबुल फ़ितन व इशरातुस्साअत) अर्थात अत: जब चौदहवीं सदी का आरम्भ हुआ तो मुसलमानो की हालत बहुत ख़राब हो गई। अत: क़ुरआन तथा हदीस में जहां मुस्लमानों के पतन की भविष्यवाणी की गई है वहां मुसलमानों के लिए ख़ुशख़बरी वाली भविष्यवाणी करते हुए अल्लाह तआला फ़रमाता

है। وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ (अल-जुमा :4) अर्थात और उन्ही में से दूसरों की तरफ़ भी (उसे मबऊस) किया है जो अभी उन से नहीं मिले वह पूर्ण प्रभुत्तव वाला (और) हिक्मत वाला है।

इस आयत की व्याख्या करते हुए आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि

"जब ईमान सुरय्या सितारे पर उठ जाएगा तो फ़ारस वालों में से एक व्यक्ति या फ़रमाया बहुत से व्यक्ति ईमान को दोबारा दुनिया में क़ायम करेंगे।

(बुख़ारी किताबुल तफ़सीर सूरह अल-जुमा)

अत: इस आख़री ज़माना में ऊपर वर्णन की गई भविष्यवाणियों के ठीक अनुसार हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादयानी अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से ख़बर पाकर इमाम महदी और मसीह मौऊद होने का दावा किया आप फ़रमाते हैं। "मुझे उस ख़ुदा की क़सम है जिसने मुझे भेजा है और जिस पर झूठ बोलना लानतियों का काम है कि उसने मसीह मौऊद बना कर मुझे भेजा है और मैं जैसा कि क़ुरआन शरीफ़ की आयतों पर ईमान रखता हूँ ऐसा ही बिना अन्तर के एक मात्र भर भी ख़ुदा की इस खुली-खुली वह्य पर ईमान लाता हूँ जो मुझे हुई, जिसकी सच्चाई उस के निरन्तर निशानों से मुझ पर खुल गई है और मैं बैयतुल्लाह में खड़े हो कर यह कसम खा सकता हूँ कि वह पवित्र वह्य जो मेरे पर नाज़िल होती है वह उसी ख़ुदा का कलाम है जिसने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और हज़रत ईसा अलैहिस्सालम और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर अपना कलाम नाज़िल किया था।" (एक ग़लती का इज़ाला ,रुहानी ख़ज़ायन भाग 18 पृष्ठ 210)

वक़्त था वक़्त मसीहा न किसी और का वक़्त
मैं न आता तो कोई और ही आया होता

आप अलैहिस्सलाम की सच्चाई के तौर पर अल्लाह तआला ने सूर्य ग्रहण और चांद ग्रहण ,ताऊन और भूकम्प इत्यादि का निशान ज़ाहिर फ़रमाया।

इस्मऊ सौतस्समा जाअल मसीह जाअल मसीह
नीज़ बिश्नो अज़ ज़मीं आमद इमामे कामगार

इसी तरह लेखराम , अब्दुल्लाह आथम और इलेक्ज़ेनडर डोई इत्यादि की हलाकतों से अल्लाह तआला ने आप की सच्चाई प्रमाणित फरमाई। आप ने मुसलमानों में पाए जाने वाले कई ग़लत अक़ीदों का सुधार फ़रमाते हुए इस्लाम की महान सेवा की। 80 से अधिक किताबें लिख कर इस्लाम , इस्लाम के संस्थापक और क़ुरआन करीम पर किए जाने वाले व्यर्थ आरोपों के तर्कपूर्ण उत्तर दिए।

आप की किताब " इस्लामी उसूल की फलासफी" के बारे में एक अख़बार लिखता है

Mobile : 9572858090, 9955553631
NEW MOBILE POINT
TABASSUM FANCY STORE
Mosabi Market No. 3, East Singhbhum
JHARKHAND Pin - 832104

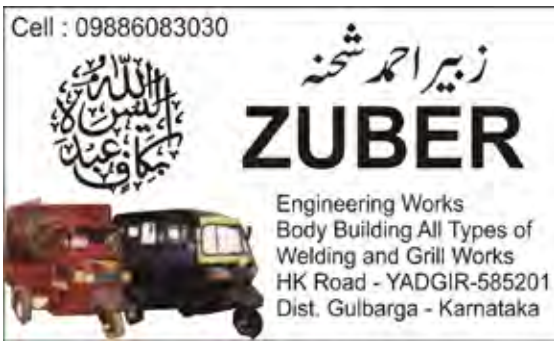

"यह किताब बहुत दिलचस्प और प्रसन्नता देने वाली है। इस के विचार रोशन, सारगर्भित और हिक्मत वाले हैं। पढ़ने वाले के मुँह से अपने आप उस की प्रशंसा निकलती है।"

(इंडियन रिव्यू बहवाला मसीह मौऊद और जमाअत अहमदिया पृष्ठ 189) सच है

सफ़े दुश्मन को किया हम ने बहुजत पामाल
सैफ का काम क़लम से ही दिखाया हमने

आप ने अल्लाह तआला की तरफ से निशान दिखाने के लिए हर मज़हब के लोगों को दावत दी और मुक़ाबला पर बुलाया मगर कोई आप के मुक़ाबला में न आया।

आज़माईश के लिए कोई न हर चंद
हर मुख़ालिफ़ को मुक़ाबिल पे बुलाया हमने

अल्लाह तआला हज़रत मसीह मौऊद औहिस्सलाम की दुआएं बहुत अधिक क़बूल फ़रमाता था। जैसा कि आप ने एक स्थान पर फ़रमाया कि

"मैं दुआ की बहुत अधिक क़ुबूलियत का निशान दिया गया हूँ। कोई नहीं जो इस का मुक़ाबला कर सके। मैं हलफ़ खा कर कह सकता हूँ कि मेरी दुआएं 20 हज़ार के लगभग क़बूल हो चुकी हैं और उनका मेरे पास सबूत है।"

(ज़रूरतुल इमाम, रुहानी ख़ज़ाइन भाग 13 पृष्ठ 497)

आप की क़बूल होने वाली दुआओं की कुल संख्या जो 1897 ई में ही 20 हज़ार हो चुकी थी, अल्लाह ही बेहतर जानता है। उनमें से अपने, अपने घर वालों और क़रीबी दोस्तों या विरोधियों के बारे में कुछ दुआओं का हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम अपनी किताबों में वर्णन भी फ़रमाया है। लेकिन क़ुबूलियत दुआ की ये असंख्य घटनाएं उन समस्त सहाबा की ज़िन्दगियों में बिखरी हुई हैं जिनका ये हर-रोज़ का मामूल था कि वे अपने हर किस्म के छोटे बड़े मामलों के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम से दुआ का निवेदन करते और फिर इन दुआओं की क़बूलीयत के गवाह बनते।

आप ने अल्लाह तआला से ख़बर पाकर एक पवित्र जमाअत क़ायम फ़रमाई और अल्लाह तआला ने वादा फ़रमाया था कि मैं तेरी तब्लीग़ को ज़मीन के किनारों तक पहुंचाऊंगा। आज आप की वफ़ात के बाद ख़िलाफ़त के अधीन जमाअत अहमदिया दुनिया के 213 देशों में फैलते हुए विजय के मार्ग पर चल रही है। दुआ है कि अल्लाह तआला सारी दुनिया को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सीरत से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ प्रदान फरमाए। आमीन

सिदक़ से मेरी तरफ़ आओ इसी में ख़ैर है
हैं दरिंदे हर तरफ़ में आफ़ियत का हूँ हिसार

Mob: 9008510546
Akmal Tailor
Hill Road, Madikeri - 571201

Pants, Shirts & All Gents Wears Stitching Here

Maqbool Ahmed Cell : 9949310679
: 9949209561
Plant Medicine
Special Treatment for : Kidney Failure, Kidney Enlarge, Shrinkage, Kidney Gall Bladder Stone, Piles
H. No. 18-2-69/a, Jangammet, Falaknuma, Hyderabad - 53